1494
31/7

मूल्यांकित उत्तर पुस्तिका

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

टेस्ट - 1

(प्रश्न पत्र I-II)

HL-2304

Maximum Marks

नाम (Name): सिंह

हाँ ✓

Date: 31-July-23

[Roll No. UPSC Exam-2023]

2	1			8	5

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

There are EIGHT questions divided in TWO SECTIONS.

Candidate has to attempt FIVE questions in all.

Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any THREE are to be attempted choosing at least ONE question from each section.

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in HINDI (Devanagari Script).

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

149

E-5 ✓

1-11

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (भूमिका दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

उत्तर अच्छे हैं।
विषयवस्तु पर पकड़ अच्छी है।
लेखन-शैली अच्छी है।
भूमिका-निष्कर्ष अच्छे हैं।
भाषा प्रवाहपूर्ण है।
उत्तरों का प्रस्तुतीकरण अच्छा है।

खण्ड - क

1. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखियेः

10 × 5 = 50

(क) मित्र बनकर रहना स्त्री-पुरुष बनकर रहने से कहीं सुखकर है। तुम मुझसे प्रेम करते हो, मुझ पर विश्वास करते हो, और मुझे भरोसा है कि आज अवसर आ पड़े, तो तुम मेरी रक्षा प्राण से करोगे। तुममें मैंने अपना पथ-प्रदर्शक ही नहीं, अपना रक्षक भी पाया है। मैं भी तुमसे प्रेम करती हूँ, तुम पर विश्वास करती हूँ और तुम्हारे लिए कोई ऐसा त्याग नहीं है, जो मैं न कर सकूँ। और परमात्मा से मेरी यही विनय है कि वह जीवनपर्यन्त मुझे इसी मार्ग पर दृढ़ रखे। हमारी पूर्णता के लिए, हमारी आत्मा के विकास के लिए और क्या चाहिए! अपनी छोटी-सी गृहस्थी, अपनी आत्माओं को छोटे-से पिंजड़े में बन्द करके, अपने दुःख-सुख को अपने ही तक रखकर, क्या हम असीम के निकट पहुँच सकते हैं? वह तो हमारे मार्ग में बाधा ही डालेगा। कुछ विरले प्राणी ऐसे भी हैं, जो पैरों में यह बेड़ियाँ डालकर भी विकास के पथ पर चल रहे हैं।

सन्दर्भ और प्रसंग — प्रस्तुत गद्यांश प्रसिद्ध उपन्यासकार प्रेमचंद जी के गोदान उपन्यास से लिया गया है। यहाँ मालती के हृदय परिवर्तन के बाद उभरी अपनी छायावादी प्रेमदृष्टि को व्यक्त करती है।

व्याख्या — मालती मेहता के विवाह प्रस्ताव के उत्तर में छायावादी प्रेमदृष्टि प्रस्तावित कर वैसा ही प्रेमसंबंध प्रस्तावित करती है जो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

प्रसाद के स्कंदगुप्त नाटक में देवसेना ने स्कंदगुप्त के प्रस्ताव के उत्तर में प्रस्तावित किया था। मालती प्रेम में विवाह बन्धन जैसे दिखावटी बंधनों को नकारती है। यहाँ प्रेम की 'प्रतिबद्धता-मूलक' दृष्टि उभरती है जहाँ सम्पूर्ण आत्म समर्पण है। यह अहंकेन्द्रित, देहकेन्द्रित नहीं बल्कि प्लेटोनिक प्रेम है जहां प्रेयसी श्रद्धा का पात्र बन जाती है।

विशेष

1. प्रेम की छायावादी दृष्टि उभरती है।

2. इसी प्रकार खुसरो कहते हैं

"खुसरो दरिया प्रेम का उल्टी वाकी धार
जो उतरा सो डूब गया, जो डूबा सो पार"

3. सरल, भाषा सहज, सुबोध हिन्दुस्तानी है।

4. पूरा प्रसंग 'उपमा शैली' में रचा गया है।

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ख) यह नयी सभ्यता का आधार धन है। विद्या और सेवा और कुल और जाति सब धन के सामने हेय हैं। कभी-कभी इतिहास में ऐसे अवसर आ जाते हैं, जब धन को आन्दोलन के सामने मुँह की खानी पड़ती है, मगर इसे अपवाद समझिए। मैं अपनी ही बात कहती हूँ। कोई गरीब औरत दवाखाने में आ जाती है, तो घण्टों उससे बोलती तक नहीं, पर कोई महिला कार पर आ गयी, तो द्वार तक जाकर उसका स्वागत करती हूँ। और उसकी ऐसी उपासना करती हूँ, मानो साक्षात् देवी है।

सन्दर्भ एवं प्रसंग प्रस्तुत गद्यावतरण हिन्दी उपन्यास परंपरा के पुरोधा रचनाकार 'मुंशी प्रेमचंद' जी के प्रसिद्ध उपन्यास 'गोदान' से उद्धृत है।

यहाँ प्रेमचंद जी अपने समय में उभरते पूँजीवाद में धन के महत्व को रेखांकित कर रहे हैं।

व्याख्या मालती जो कि उपन्यास की शहरी पात्र है। मेहता से बता रही है कि आज धन के सामने जाति, कुल, विद्या सब हेय हैं। इस पूंजीवाद मानसिकता से निर्मित समाज में धन ही सब कुछ है। वह अपना

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

उदाहरण देकर बताती है कि वास्तव में मानवता समानता से ऊपर धन की व्यवस्था है।

विशेष:

1. मालती, गोबर के अछूतपन को ले सहमत दिख रही है जहाँ वह कहता है। "रुपये हों तो न जात-बिरादरी का काम न हुक्का पानी का"

2. पंक्तियों में 'समाजवादी दृष्टिकोण' से धन की पूँजीवादी व्यवस्था का मूल चेहरा उजागर कर रहे हैं।

3. भाषा सहज, सरल हिन्दुस्तानी है।

6

दृष्टि The Vision

(घ) [illegible] वर्णमय चित्र है, जो स्वर्गीय भावपूर्ण संगीत गाया करता है। अन्धकार का आलोक से, असत् का सत् से, जड़ का चेतन से, और बाह्य जगत् का अन्तर्जगत् से संबंध कौन कराती है? कविता ही न!

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ एवं प्रसंग — प्रस्तुत गद्यावतरण प्रसिद्ध छायावादी नाटककार 'जयशंकर प्रसाद जी' के नाटक 'स्कन्दगुप्त' से अवतरित है। यहाँ मातृगुप्त कविता का महत्व बता रहा है।

व्याख्या — मातृगुप्त कहता है। कि कविता शब्दों से युक्त रंगीन चित्र के समान है। यह कविता सृजन परमानन्दमयी संगीत के सुनने के समान है। कविता ही दो विरोधी स्थितियों का संगम करा सकती है। अंधकार को प्रकाश से जोड़ने का काम कविता ही करती है। कविता ही अंतर्मन और बाह्यजगत का मेल कराती है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष :

1. कविता का भारतीय शास्त्रीय रूप अर्थात ब्रह्मानन्दसहोदर रूप व्यक्त है।

2. कविता को 'भावपूर्ण संगीत' कहना आचार्य शुक्ल द्वारा कविता को 'भावयोग' की संज्ञा देने के समान है।

3. मध्ययुग कविता की परिभाषा ठीक वैसी बताता है जैसी आचार्य शुक्ल 'कविता क्या है निबन्ध' में बताते हैं - कि- "व्यक्ति हृदय के लोक हृदय में लीन होने की स्थिति ही भावयोग है।"

Good 6/10

4. भाषा तत्समी है। भाषा में एक आंतरिक काव्यात्मक रूप विद्यमान है।

(क) जीवन का कोई अनुभव स्थायी और चिरन्तन नहीं। जीवन की स्थिति समय में है और समय प्रवाह है। प्रवाह में साधु-असाधु, प्रिय-अप्रिय सभी कुछ आता है। प्रवाह का यह क्रम ही सृष्टि और प्रकृति की नित्यता है। जीवन के प्रवाह में एक समय असाधु, अप्रिय अनुभव आया इसलिये उस प्रवाह से विरक्त होकर जीवन की तृषा को तृप्त न करना केवल हठ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ एवं प्रसंग हिन्दी के प्रगतिवादी उपन्यास धारा के प्रसिद्ध रचनाकार 'यशपाल' ने अपने उपन्यास 'दिव्या' में वंचित वर्गों विशेषकर 'नारी समस्या' को मानवतावादी दृष्टि से विश्लेषित किया है।

प्रस्तुत दिव्या उपन्यास की उपर्युक्त पंक्तियों में भी वे मारिश के माध्यम से दिव्या को समय और जीवन का महत्व बता रहे हैं।

व्याख्या मारिश दिव्या से कहता है कि [illegible] परिवर्तनशील है। इस परिवर्तन के [illegible] जीवन दुःख और सुखों के [illegible]

दृष्टि The Vision ... www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number, in this space)

के साथ चलता रहता है। लेकिन जीवन के में आपेक्षिक के दृढ़ों की छाया को ही हमेशा पकड़े रहना और उसे ही जीवन मानकर सुखों की ओर न बढ़ना केवल हठ मात्र है।

विशेष

1. पंक्तियों में मार्क्सवादी इतिहास दृष्टि व्यक्त है यथा - "परिवर्तन ही इतिहास का तत्व है"

2. बौद्ध धर्म भी मानता है- "हम एक नदी में दो बार नहीं नहा सकते"

6/15

3. उपन्यास की भूमिका का वाक्य कि "मनुष्य प्रतीक्षा नहीं करता है" भारिया के रूप में उपस्थित है जहाँ वह दिव्या से जीवन की धारा परिवर्तन की बात कह रहा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

(ङ) मैं तो जा रहा हूँ, पर इतना कहे देता हूँ, आप भी समझा दें उसे- कि रहना हो तो दासी बनकर रहे। न दूध की, न पूत की। हमारे कौन काम की. पर हाँ, औरतिया की सेवा करे, उसका बच्चा खिलावे, झाड़ू, बुहारु करे तो दो रोटी खाय, पड़ी रहे। पर कभी उससे ज़बान लड़ाय तो खैर नहीं। हमारा हाथ बड़ा ज़ालिम है। एक बार कूबड़ निकला, तो अगली बार प्रान ही निकलेगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सन्दर्भ एवं प्रसंग

प्रस्तुत पंक्तियाँ कहानीकार 'धर्मवीर भारती' की कहानी 'गुलकी बन्नो' से उद्धृत हैं। इस कहानी में लेखक ने एक नारी के शोषण को पूरे यथार्थ के साथ अभिव्यक्त किया है।

प्रस्तुत पंक्तियों में भी 'गुलकी' के प्रति उसके पति के दमनकारी चरित्र का वर्णन है।

व्याख्या

गुलकी बन्नो का मकान मुहल्ले वाले हड़पना चाहते हैं। इसलिए उसके पति को ले आने के लिए बुलाते हैं। पति कहता है कि मैं गुलकी को ले तो ...

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

रहा हूं पर अगर उसने अपनी सौतन से जवाब तलब किया तो इसकी खैर नहीं।

व्याख्या

1. एक गरीब, असहाय महिला का पितृसत्तात्मक विचारों से युक्त पुरुष के शोषण की प्रभावी अभिव्यक्ति हुयी है।

2. गुलकी के प्रति उसके पति का तिरस्कार पूर्ण और दमनकारी रूप समक्ष है।

3. यह प्रकारान्तर भारतीय नारी के शोषण का अंकन है।

4. पंक्तियों लय और शब्द चयन में आंचलिकता से युक्त है। पितृसत्ता, [illegible] जैसे शब्द 'पड़ी रहे' जैसे ग्रामीण जीवन में [illegible]

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

3. (ख) 'अपने उपन्यासों एवं कहानियों में प्रेमचंद की बुनियादी चिन्ताएँ अपने समय की भी हैं और भविष्य की भी हैं।' इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिये। 20

मुंशी प्रेमचंद जी की कहानियाँ और उपन्यास का कथानक आम जन जीवन से प्रेरित है। उनमें चिंताएँ शाश्वत किस्म की हैं जो वर्तमान में उतनी प्रासंगिक है जितनी रचना के समय थी।

रानी सारन्धा कहानी तथा सेवासदन जैसे उपन्यास में उन्होंने महिलाओं के आत्मसम्मान का प्रश्न उठाया है। यह प्रश्न आज भी उतनी चिंता के साथ हमारे सामने आता है।

ईदगाह कहानी एक बच्चे के जीवन की त्रासदी पर आधारित है जहाँ समाज की सैद्धान्तिक समानता और व्यवहारिक असमानता पर चोट की गयी है। बच्चों के जीवन के अभाव आज भी मुख्य प्रश्न [illegible]

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें
(Please do not write anything except the question number in this space)

बूढ़ी काकी कहानी में वृद्धों की समस्या को उठाया गया है। वृद्धों की देखभाल, उनका पेंशन इत्यादि संबंधी समस्याएँ भीष्म साहनी की 'चीफ की दावत' संबंधी कहानी में भी है। और यह समस्या वर्तमान भारतीय समाज का भी यथार्थ है।

गबन उपन्यास मनुष्य की असीम इच्छाओं के दुष्परिणाम के साथ प्रशासन में उपस्थित भ्रष्टाचार उजागर करता है। उपन्यास में व्यक्त भ्रष्टाचार की मानसिकता सामाजिक आचार आज भ्रष्टाचार के संस्कृतिकरण का रूप ले चुका है।

किसानों की समस्या प्रेमचंद जी के उपन्यासों, कहानियों का [illegible] विषय रहा है

दृष्टि The Vision 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 ... 8448485518, 011-47532596 ... www.drishtiIAS.com

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

जिस तरह गोदान के होरी का बिरादरी, धरम, मरजाद, पंचायत के कारण किसानत्व ही संकट में पड़ गया है वैसे ही 'पूस की रात' में हल्कू की स्थिति है। वर्तमान में भी किसानों की हालत कमोबेश होरी और हल्कू जैसी ही है।

दलितों की समाज प्रेमचंद के उपन्यासों और कहानियों में गहरी होकर उभरी है। चाहे 'सद्गति' का 'दुःखी' हो या 'कफन' के 'घीसू, माधव' चाहे वह गोदान का सिलिया का परिवार दलितों की निम्नतम स्थिति और प्रभुवर्ग द्वारा उनका शोषण पूरी संवेदना के साथ प्रेमचंद जी के रचनाकर्म में [illegible]

स्त्रियों की समस्या प्रेमचंद के [illegible] वर्तमान भारत की भी समस्या है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 www.drishtiIAS.com

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नागार्जुन ने 'हरिजनगाथा' दलितों के शोषण पर ही लिखि

समग्रतः प्रेमचंद जी के उपन्यास और कहानियाँ भारतीय समाज के उस जटिल यथार्थ की पड़ताल करने का प्रयास करते हैं जो उनके समय के साथ ही भविष्य में भी विद्यमान रहा है।

दृष्टि The Vision

(ख) 'खोई हुई दिशाएँ' कहानी में नई कहानी की विशेषताएँ किस रूप में दिखाई देती हैं? प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'खोई हुयी दिशाएँ' कहानी रचनाकार कमलेश्वर की प्रतिनिधि कहानी है। यह कहानी नयी कहानी आंदोलन के मूल्यों को संपूर्णता में धारण करती है।

नई कहानी शहरी मध्यवर्गीय व्यक्ति के जीवन में उपस्थित संत्रास, अकेलापन, पहचान के संकट तथा ऊब को संवेदना के केन्द्र में रखती है। अपनी जड़ों से उखड़े मनुष्य की शहरी वातावरण में घुटन आदि 'खोई दिशाएँ' का मूल विषय है। कहानी के नाम 'खोई हुयी दिशाएँ' [illegible]

[illegible] कहानी के नायक चन्दर

Copyright – Drishti The Vision

की मूल समस्या ही है कि "उसे और कुछ नहीं चाहिए, परिचय की एक माँग है" चन्दर सोचता है "यहाँ देश की राजधानी में जहाँ सब अपना है, अपने देश का, फिर भी कुछ भी अपना नहीं, अपने देश का नहीं"

यह अकेलापन उब किस कदर व्यक्ति को अन्दर से तोड़ देती है यही चन्दर की मन: स्थिति से व्यक्त हुआ है,

शहरीवातावरण में आपसी सम्बन्ध कितने सतही और क्षणिक होते हैं यह भी कहानी [illegible] में चन्दर और [illegible] [illegible] तीन महीने से जानकर भी नाम से बिल्कुल अनजान पड़ते हैं भूल चुकी है" [illegible] [illegible] भी बस मतलब [illegible] [illegible] करते हैं

खोई हुयी दिशाएं शैल्पिक स्तर पर भी नयी कहानी की विशेषताएँ धारण करती है। यहाँ परंपरागत कहानी का कथानक ढाँचा टूट चुका है। भाषा अत्यंत प्रतीकात्मक है जो चन्दर की आंतरिक घुटन और संघर्ष को व्यक्त करने में सक्षम है।

भाषा बिम्बात्मक और कथ्य को संपूर्णता में धारण करने में सक्षम हुयी है।

समग्रतः 'खोई हुयी दिशाएं' नयीकहानी आंदोलन की विशेषताओं को सम्पूर्णता में [illegible] कहानी हुयी नयी [illegible] [illegible] प्रतिनिधित्व करती है।

G.I.E 9/15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कविता क्या है' निबंध के आधार पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की काव्य-दृष्टि पर प्रकाश डालिए। 15

कविता क्या है निबंध आचार्य शुक्ल का मौलिक काव्यशास्त्रीय निबंध है। यह उनके निबंधों का प्रतिनिधि निबंध है जिसमें उन्होंने अपनी ~~काव्यशास्त्रीय~~ कविता संबंधी मान्यताएँ प्रस्तुत की हैं।

आचार्य शुक्ल कविता को 'भावयोग' की संज्ञा देते हैं और उसे कर्मयोग तथा ज्ञानयोग के समान प्रतिष्ठापित करते हैं।

शुक्ल जी के अनुसार 'व्यक्ति हृदय को लोकहृदय में लीन होना जाना ही भावयोग है। और 'इसी भावयोग के लिए जो शब्द विधान रचा जाता है वही कविता कहलाता है"

अतः यहाँ शुक्ल जी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कविता की रसवादी व्याख्या करते हुए भी उसे अनिवार्यतः लोकमंगल के पक्ष से जोड़ते हैं।

शुक्ल जी मानते हैं कविता में रहस्यवाद प्रतीकवाद नहीं होना चाहिए यह काव्य के अर्थग्रहण को बाधित करता है।

उनका मानना है कि कविता की भाषा नाद सौंदर्य से युक्त हो तथा व्यक्ति विशेष नामों की जगह कार्य विशेष नामों का प्रयोग करना चाहिए।

आचार्य शुक्ल कविता में 'भाव प्रेरित वक्रता' को सर्वाधिक महत्व देते हैं। बुद्धिप्रेरित वक्रता की आलोचना करते हैं इसलिए उन्हें सूर की उक्तियाँ सुन्दर लगती हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जबकि क्रोचे के अभिव्यंजनावाद और पश्चिमी विचारक क्रोचे के प्रति वे आलोचनात्मक दृष्टि रखते हैं।

कविता में बिंब के विषय में उनका मानना है कि- "कविता में अर्थग्रहण मात्र से काम नहीं चलता बिंबग्रहण भी अपेक्षित होता है।"

इसी तरह शुक्ल जी कविता में अलंकारिकता को काम्य नहीं मानते।

समग्रतः कविता क्या है निबंध के माध्यम से आचार्य शुक्ल ने हिन्दी साहित्य को अपना मौलिक काव्यशास्त्र सौंपा है।

1. (क) मोहन राकेश चाहते थे कि 'आषाढ़ का एक दिन' के माध्यम से हिन्दी का एक मौलिक रंगमंच स्थापित करें। इस संबंध में उनकी दृष्टि स्पष्ट करते हुए बताएँ कि वे कहाँ तक सफल हो सके? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मोहन राकेश हिन्दी नाट्य विधा के आधुनिक नाटककार हैं। उन्होंने हिन्दी नाटक के लिए मौलिक रंगमंच स्थापित करने का प्रयत्न किया जिसमें वे काफी हद तक सफल भी रहे।

मोहन राकेश का मानना है कि "हिन्दी रंगमंच को हिन्दी जगत की सांस्कृतिक आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करना होगा"

वे मानते हैं इसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि आधुनिक तकनीकि, प्रौद्योगिकी से युक्त रंगशालाएं जगह-जगह स्थापित कर दी जाएँ उनका मानना है कि पश्चिमी ... की तकनीकि और वित्तीय

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

क्षमता के दम पर कठिन से कठिन दृश्य प्रस्तुत कर पाता है। पर हमें अपनी शक्तियों को पहचानकर उसके अनुसार रंगमंच को विकसित करना होगा।

मोहन राकेश का मानना है कि 'मानव तत्व और शब्द तत्व' हमारी क्षमता है इनके आधार पर हमें हिंदी का एक मौलिक रंगमंच स्थापित करना चाहिए।

अपने प्रथम नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' के माध्यम से मोहन राकेश अपने मौलिक रंगमंच स्थापना संबंधी विचार में खासे सफल हुए हैं। इस नाटक की मूल संवेदना स्था तथा सृजन का द्वंद्व है, नाटक में केवल तीन दृश्य हैं। ये तीनों दृश्य

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अत्यंत सरल है केवल एक परदा, दो चादर और कुछ दीपक हों तो रंगमंच का काम चल जाता है।

इस नाटक में मोहन राकेश ने मानवतत्व का कुशल प्रयोग किया है। मल्लिका तथा कालिदास के हावभाव, परिस्थितियों के अनुसार उनकी प्रतिक्रियाएं तथा कुशल अभिनय और पर्याप्त रंग-संकेतों से वे ऐसा करने में सफल हुए हैं। उदा०

मल्लिका – "टहलते हुए, होंठ चबाती है"

शब्दतत्व का भी इस नाटक में सफल प्रयोग हुआ है। घोड़ों की टापों से मल्लिका की आंतरिक उथल पुथल और कालिदास के आने की क्रम बंधी-टूटती

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उम्मीद हो या बाहनों की गरपन से मल्लिका-अंबिका तथा मल्लिका-कालिदास के जटिल होते जाते संबंध हों। व सभी स्थितियों को ध्वनि के कुशल प्रयोग से अत्यधिक प्रभावी बना दिया गया है।

समग्रत: मोहन राकेश अपने नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' में' हिन्दी के मौलिक रंगमंच की स्थापना में काफी हद तक सफल हुए हैं।

12/20

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'प्रेमचंद की कहानियों में मनोविज्ञान का सुंदर प्रयोग हुआ है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेमचंद की कहानियों में प्रयुक्त मनोविज्ञान उनके व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित सामाजिक मनोविज्ञान है। यह मनोविज्ञान जैनेन्द्र, अज्ञेय की तरह एकेडमिक मनोवैज्ञानिक पुस्तकों पर आधारित नहीं है।

प्रेमचंद जी का पात्र/चरित्रों के मनोविज्ञान का प्रयोग सामान्यत चरित्र का व्यक्तिगत न होकर वर्गगत है जैसे 'बड़े घर की बेटी' में वे कहते हैं— "आनंदी स्त्रियों की भाँति रोने लगी, आँसू तो उनकी पलकों पर होते हैं"

इसी तरह बूढ़ी काकी कहानी में उन्होंने वृद्धों के मनोविज्ञान का उद्घाटन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

करते हैं। बूढ़ीकाकी की तीव्र क्षुधा पर वे कहते हैं- " बुढ़ापे में सारी इच्छाएँ एक बिंदु पर आ लगती हैं"

इसी तरह सद्गति कहानी में उन्होंने दलित मनोविज्ञान का अत्यंत सूक्ष्म और यथार्थ प्रयोग किया है। वे दिखाते हैं कि हजारों वर्षों से धर्म, मरयाद के नाम पर शोषित दलित वर्ग स्वयं ही खुद को हीन समझने लगा है- यथा- " आग की बड़ी सी चिंगारी दुःखी के सर पर गिरी, x x x — वह सोचता है कितनी जल्दी भगवान ने कर्मों का फल दे दिया। — x x — यह एक ब्राह्मण के घर को अपवित्र करने का फल है, भगवान ने कितनी

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-...

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

जल्दी दे दिया "

कफन में गरीबी और जहालत से जिन्दगी की लड़ाई करते हुए किस प्रकार मनुष्य असंवेदनशील हो जाता है दिखाया गया है।

समग्रतः प्रेमचंद जी ने अपनी कहानियों में समाज के लगभग सभी वर्गों को उनके मनोविज्ञान के साथ उभारने का सफल प्रयास किया है।

दृष्टि | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'भोलाराम का जीव' कहानी स्वातंत्र्योत्तर भारत की कार्यपालिका में व्याप्त भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करती है।' - विवेचन कीजिये। 15

'भोलाराम का जीव' कहानी हिन्दी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार 'हरिशंकर परसाई' जी की भारतीय प्रशासनिक जड़ता, संवेदनशून्यता और नौकरशाही में व्याप्त भ्रष्टाचार पर व्यंग्य करने वाली कहानी है।

भोलाराम का जीव मृत्यु के बाद स्वर्ग नहीं पहुँचता। बाद में पता चला है कि वह अपनी पेंशन की दरख्वास्तों पर अटका हुआ है।

मिथकीय आधार पर रचित यह कहानी भोलाराम के जीव के माध्यम से स्वातंत्र्योत्तर भारत की कार्यपालिका की लापरवाही और भ्रष्टाचार का पर्दाफाश

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

करती है। जहाँ व्यक्ति ~~दफ्तर~~ सरकारी अफसरों, कार्यालयों के चक्कर लगाते-लगाते मृत्यु तक पहुँच जाता है किंतु उसका काम नहीं होता।

चित्रगुप्त आदि के संवादों के माध्यम से इस भ्रष्टाचार के स्वरूप को पूरी नग्नता से बताया गया है कि किस प्रकार पोस्ट ऑफिस से पोस्टल आर्डर गायब हो जाते हैं और सरकारी चैनों का अन्दर ही ~~अन्दर~~ बँटवारा हो जाता है।

आम जनता उसी लाचारी और बेबसी में जिन्दा रहने को मजबूर होती है।

समग्रत: 'भोलाराम का जीव' कहानी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

व्यंग्यात्मक रूप में सरकारी तंत्र के धनतंत्र में बदल जाने की स्थिति बयां करती है जहाँ बिना घूस दिए कोई काम नहीं होता।

8½/11

दृष्टि The Vision

खण्ड - ख

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

(क) हमारा सृष्टि-संहार-कारक भगवान् तमोगुणजी से जन्म है। चोर, उलूक और लंपटों के हम एकमात्र जीवन हैं। पर्वतों की गुहा, शोकितों के नेत्र, मूर्खों के मस्तिष्क और खलों के चित्त में हमारा निवास है। हृदय के और प्रत्यक्ष, चारों नेत्र हमारे प्रताप से बेकाम हो जाते हैं। हमारे दो स्वरूप हैं, एक आध्यात्मिक और एक आधिभौतिक जो लोक में अज्ञान और अंधेरे के नाम से प्रसिद्ध हैं।

सन्दर्भ एवं प्रसंग प्रस्तुत गद्य पंक्तियाँ 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' के प्रसिद्ध नाटक 'भारत दुर्दशा' से उद्धृत है। नाटक में भारतेन्दु जी ने भारत की दुर्दशा के आंतरिक और बाह्य कारणों की पहचान की है। प्रस्तुत पंक्तियों में उन्हीं कारणों में से एक 'अंधकार' अपना परिचय दे रहा है।

व्याख्या अंधकार स्खलित रूप करता हुआ मंच में प्रवेश करते हुए कहता है। मैं अंधकार हूँ मेरा जन्म तमोगुण स्वरूप

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

रहे हैं। संसार के सभी चूहे और नीच प्राणियों में मेरा वास है। जिस तरह पर्वतों की गहरी गुफाएँ अंधकार मय हैं। उसी तरह मूर्खों के मस्तिष्क पर भी मेरा अधिकार है। अंधकार के प्रभाव से मनुष्य के नेत्र बेकाम हो जाते हैं। वस्तुतः यह अंधकार तत्कालीन भारतीय जनमानस के चित्त में छाया है जो आत्मविश्वास, आत्मसंयम को छीनकर लोगों को डुला रहा है।

विशेष :

1. पंक्तियों में प्रकारान्तर लोगों की में राष्ट्रीयता की भावना, आत्मविश्वास के अभाव पर व्यंग्य है।
2. यह चेतना नवजागरण से युक्त है।
3. भाषा सरल सहज आम बोलचाल की है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ख) जीवन में एक समय प्रयत्न की असफलता मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन नहीं है। जीवन का हम अन्त नहीं देख पाते, वह निस्सीम है। वैसे ही मनुष्य का प्रयत्न और चेष्टा भी सीमित क्यों हो? असामर्थ्य स्वीकार करने का अर्थ है, जीवन में प्रयत्नहीन हो जाना, जीवन से उपराम हो जाना।

सन्दर्भ एवं प्रसंग प्रस्तुत गद्यांश प्रगतिवादी उपन्यास धारा के पुरोधा 'यशपाल' के प्रसिद्ध मार्क्सवादी उपन्यास 'दिव्या' से लिया गया है। यहाँ 'मारिश' दिव्या को जीवन में विफलता से टूटकर विरक्त होने की जगह पुनः प्रयत्न करने की प्रेरणा दे रहा है।

व्याख्या दिव्या की पृथुसेन से प्रेम में विफलता, उसके पुत्र की मृत्यु और दासी बनने के बाद जीवन से विरक्त होने के विरुद्ध मारिश दिव्या को समझाता है कि मनुष्य का कार्य है प्रयत्न करना। सफलता विफलता तो कार्य का अनिवार्य

दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

परिणाम है। विफलता देखकर प्रयत्न करना छोड़ना स्वयं से अन्याय है। जिस तरह जीवन असीम है। इसमें संभावनाएँ असीम हैं वैसे ही हमारे प्रयत्न सीमित क्यों रहें।

विशेष: 1. दिव्या में जीवन के प्रति मोह जगाने का प्रयत्न दिखता है।

2. प्रयत्नों के संबंध में किसी कवि ने कहा है- "उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है।"

3. सफलता, असफलता और जीवन के बीच संबंधों का विश्लेषण किया गया है।

4. पंक्तियों की भाषा तत्समी होकर भी बोधगम्य और प्रवाहयुक्त है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) तुम मेरे सम्पूर्ण जीवन के प्रयत्नों को, अपने वंश के भविष्य को एक युवती के मोह में नष्ट कर देना चाहते हो। महापण्डित चाणक्य ने कहा है, "आत्मन सतत रक्षेत दारैरपि धनैरपि।" पुत्र, स्त्री भोग्य है। मति भ्रम होने पर मोह में पुरुष स्त्री के लिये बलिदान होने लगता है। वत्स, ऐसी ही परिस्थिति में नीतिज्ञ महत्त्वाकांक्षी और परलोककामी पुरुष के लिये नारी को पतन का द्वार कहते हैं।

सन्दर्भ एवं प्रसंग: नारी और वंचित वर्गों के शोषण को मुखरित करना 'यशपाल' के प्रसिद्ध उपन्यास 'दिव्या' की मूल संवेदना है। उपन्यास में यशपाल ने 'सागल बृक' तथा प्रथुसेन के पिता के माध्यम से नारी के प्रति भोगवादी और वस्तुवादी नज़रिया प्रस्तुत किया है। जिसकी एक बानगी प्रस्तुत पंक्तियों में स्पष्ट है।

व्याख्या: 'प्रेस्थ' अपने पुत्र प्रथुसेन को समझाता है कि शक्तिशाली पुरुष अनेक स्त्रियां भोग सकता सकता है। इसलिए एक

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

स्त्री के मोह में तुम सामने आयी सम्भावनाओं और कुल के लाभ को नष्ट न करो। शास्त्रों में ज्ञानी, महात्मा इसीलिए नारी को पतन का मार्ग मानते हैं।

विशेष : 1. नारी के शोषण और उनकी सामाजिक स्थिति की व्यंजना हुयी है।

2. नारी के प्रति त्याग और पतन दृष्टि तो कबीर जैसे प्रगतिशील कवियों की भी है।

"नारी के संग पड़त अंधा होत भुजंग
कबिरा तिनकी कौन गति, जे नित नारी के संग।"

3. महिलाओं के प्रति वस्तुवादी नजरिया प्रस्तुत हुआ है। और परतन्त्र मानकर पितृसत्तात्मक दृष्टि प्रस्तुत है।

4. भाव कथ्य की प्रभावी अभिव्यक्ति में सक्षम है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) संसार से तटस्थ रह कर शांति-सुखपूर्वक लोक-व्यवहार-संबंधी उपदेश देने वालों का उतना अधिक महत्त्व हिन्दू धर्म में नहीं है जितना संसार के भीतर घुस कर उसके व्यवहारों के बीच सात्विक विभूति की ज्योति जगाने वालों का है। हमारे यहाँ उपदेशक ईश्वर के अवतार नहीं माने गए हैं। अपने जीवन द्वारा कर्म सौंदर्य संघटित करने वाले ही अवतार कहे गए हैं।

सन्दर्भ एवं प्रसंग — अवतरित पंक्तियाँ हिन्दी निबंध परंपरा के शिखर पुरुष 'आचार्य शुक्ल' के निबंध संग्रह 'चिंतामणि' के प्रसिद्ध 'निबंध' 'श्रद्धा-भक्ति' से लिया गया है।

यहाँ आचार्य शुक्ल भारतीय धर्म-संस्कृति की सूक्ष्म व्याख्या में ईश्वर अवतार की आधुनिक, प्रगतिशील व नवजागरणवादी व्याख्या दे रहे हैं।

व्याख्या — आचार्य शुक्ल कहते हैं भारतीय समाज उपदेशकों को ईश्वर नहीं मानता यहाँ जो व्यक्ति स्वयं अपने महान कर्मों

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

से समाज को दिशा देते हैं वही ईश्वर कहलाते हैं।

विशेष

1. ईश्वरत्व और अवतारवाद की आधुनिक व्याख्या है। यह व्याख्या 'गीता' के 'यदा यदा ही धर्मस्य' और 'तुलसी' के 'जब-जब होय धरम कै हानी' जैसे कथनों से संगत है।

2. अवतारवाद की 'लोकमंगलवादी' व्याख्या है।

3. भाषा 'गूढ़ विचारों की गुम्फित' धारा को धारण किए है।

4. भाषा तत्समी किंतु अर्थगर्भी है।

(ङ) उसकी आँखें बन्द हो गयीं और जीवन की सारी स्मृतियाँ सजीव हो-होकर हृदय पट पर आने लगीं, लेकिन बे-क्रम, आगे की पीछे, पीछे की आगे, स्वप्न चित्रों की भाँति बेमेल, विकृत और असम्बद्ध। वह सुखद बालपन आया, जब वह गुल्लियाँ खेलता था और माँ की गोद में सोता था। फिर देखा, जैसे गोबर आया है और उसके पैरों में गिर रहा है। फिर दृश्य बदला, धनिया दुलहिन बनी हुई, लाल चुंदरी पहने उसको भोजन करा रही थी। फिर एक गाय का चित्र सामने आया, बिल्कुल कामधेनु सी। उसने उसका दूध दुहा और मंगल को पिला रहा था कि गाय एक देवी बन गयी और...।

संदर्भ एवं प्रसंग — भारतीय किसान की दशा को पूरे यथार्थ से अभिव्यक्ति देने में सक्षम 'गोदान' उपन्यास की ये पंक्तियाँ 'होरी' की त्रासद मृत्यु को व्यंजित कर रही हैं। 'प्रेमचंद' जी ने मृत्यु के अंतिम समय की मनः स्थिति का अत्यंत मार्मिक अंकन किया है।

व्याख्या — होरी जीवन भर गाय की लालसा लिए जीता रहा। गाय की इच्छा मन में लिए ही वह मर जाता है। मृत्यु के अंतिम समय की उसकी

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मन: स्थितियों में पूरा जीवन आँखों के सामने घूमता है उसका बालपन, विवाह, गोबर का वापस आना और गाय। वस्तुत: ये उसके जीवन के सुखद और प्रबल इच्छा वाले क्षण हैं जो मृत्यु के समय याद आते हैं।

विशेष

1. मृत्यु के समय की प्रभावशाली व्यंजना हुयी है।
2. 'गाय का देवी बनना' होरी की गाय की इच्छा की पूर्ति न होने का प्रतीक है। वह मरने से पहले कहता है- "अब जाने दे धनिया..... गाय की लालसा मन में रह गयी"

G.

3. भाषा प्रवाहपूर्ण और विचारों को मूर्त रूप देने में सक्षम है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) मैला आँचल की भाषा शैली पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्य में मैला आँचल सर्वश्रेष्ठ आँचलिक उपन्यास माना जाता है इसकी सर्वश्रेष्ठता का मूल आधार इसकी भाषा है। भाषा इतनी रचनात्मकता और सृजनात्मकता के साथ भिन्न-भिन्न तेवर लेकर उपस्थित हुयी है कि भाषा के स्तर पर भी यह उपन्यास नये प्रतिमान गढ़ देता है। इसकी भाषागत विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं

उपन्यास की भाषा मूलत: तद्भव और देशज है जिसमें मिथिलांचल की लोक-शब्दावली अपने ठेठपन के साथ उपस्थित है। इसमें विदेशज शब्दों के लोक विकृत रूप प्रयुक्त हुए हैं यथा- भैसचरमन (vice chairman)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

पुलोगराम (प्रोग्राम), फालरम (फार्म) आदि

मैला आँचल की भाषा पात्रों के अनुसार परिवर्तनशील है 'डा.' आदि शहरी परिवे अंग्रेजी मिश्रित तत्सम भाषा बोलते हैं। मेरीगंज के लोग ग्रामीण भाषा- जैसे -

"आज तसिला टोली मा धमाधम पंचायत हो रही है"

मैला आँचल में जगह जगह मउजिया के गीत, जाट जटिरन का खेल, खलिहानों में किसानों के गीत आदि उपस्थित होते मे अपनी रूतीगोपता और स्वन्यात्मकता के साथ उपन्यास में आये हैं उदाहरणार्थ

"डिम डिमिक डिमिक" तथा

गिड़ गिड़, गिड़धा, गिड़धा गिड़धा"

इसी तरह -

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

"पाद जते आवे व्यारी तोहरी सुरतिया से लागे करेजवा में तीर जी"

मैला आँचल में जगह जगह लोक संस्कृति में प्रचलित मुहावरे लोकोक्तियाँ प्रयुक्त हुयी हैं यथा -

"माघ का जाड़ा तो बाघ को भी ठण्डा कर देता है"

ग्रामीण संस्कृति में लोग उदाहरणों से अपनी बात कहते जाते हैं। भाषा की यह शैली भी मैला आँचल में उपस्थित है जैसे - कविवर हंसकुमार तिवारी की कविता याद आती है -

"दुनिया कूस बटोर चुकी है मैं इक चिन्गारी दे दूँगा"

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उपन्यास में प्रतीकात्मकता, विचार-प्रवाह शैली इत्यादि विशेषताएं भी पर्याप्त मात्रा में प्रयुक्त हुयी हैं।

समग्रतः मैला आँचल अपने भाषागत प्रयोगशीलता का भी प्रतिमान है रेणु के अन्य उपन्यास जैसे 'परती परिकथा' आदि भी ऐसी भाषागत सृजनात्मकता नहीं पा सके हैं।

12

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'यही सच है' कहानी की शिल्प-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

'यही सच है' नयी कहानी आंदोलन की प्रसिद्ध ~~कविता~~ कहानी है जिसमें 'मन्नू भण्डारी' जी ने 'प्रेम की प्रतिबद्धता' का आर्थिक और मनोवैज्ञानिक सुरक्षा की तुला पर तौला है

यह कहानी अपनी संवेदना के साथ ही शैल्पिक प्रयोगधर्मिता के कारण प्रसिद्ध है।

कहानी की रचना 'डायरी शैली' में की गयी है जिस कारण मन्नू जी दीपा के मन में चलने वाली उन बातों को भी कह पायी हैं जो सामान्यतः नहीं कही जा सकती हैं।

यहाँ कहानी का परंपरागत ढाँचा नहीं है। कहानी दीपा के ~~कुछ~~ डायरी के कुछ पन्ने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

भाग है जिन्हें कानपुर और कोलकाता तथा किंतु कानपुर में लिखा गया है।

कहानी में नायिका सीमित है इसमें मात्र दीपा की मानसिक उथल-पुथल बताया की गयी है।

कहानी की भाषा तत्सम है और प्रवाह से युक्त है उदाहरणार्थ - " जितनी ~~तेजी~~ से द्रुत गति से टैक्सी चली जाती है उतनी तेजी से मैं भी... अबांछित दिशाओं की ओर "

भाषा में आत्मप्रवाह शैली का प्रयोग किया गया है जो दीपा की मनोभावनाओं को संपूर्णता में व्यक्त करने में सक्षम हुयी है। प्रतीकात्मकता, प्रत्यावलोकन शैली तथा फ्लैशबैक आदि शैलियाँ कहानी में प्रयुक्त हुयी हैं।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

समग्रतः यही सच है कहानी नई कहानी आंदोलन की विशेषताओं को धारण करती हुयी प्रतिनिधि कहानी है।

दृष्टि The Vision

(ग) 'नई कहानी' की विशेषताओं के संदर्भ में राजेंद्र यादव की कहानी 'टूटना' पर विचार कीजिए। 15

नयी कहानी हिन्दी साहित्य का साठ के दशक का आंदोलन है। इसमें 'अनुभूति की प्रामाणिकता' शहरी जीवन का अकेलापन, तनाव, रिश्तों की टूटन और बिखराव, अजनबीपन निरर्थकताबोध पति-पत्नी के संबंधों में आई तल्खी आदि जैसे संवेदनागत विशेषताएँ तथा कथानक का बिखराव, प्रतीकात्मक व व्यंग्यात्मक भाषा, चेतना प्रवाह, प्रत्यावलोकन आदि शैलीगत विशेषताएँ हैं।

ये सभी विशेषताएं राजेन्द्र यादव की कहानी 'टूटना' में सम्पूर्णता में व्यक्त हुयी हैं। कहानी की मूल संवेदना पति-पत्नी के संबंधों का बिखराव है। प्रेमचंद की कहानियों में व्यक्त बेमेल विवाह में उम्र मुख्य अंतर है जबकि यहाँ भाषा का अंतर, वर्ग-अंतराल, मानसिक अंतराल

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www...

दृष्टि The Vision

अखिल मुखर हो गया है। किशोर के मन में छिपी हीनता ग्रंथि बार बार नीचा दिखाए जाने के बाद कैसे आक्रामक और विद्रोही तेवर धारण करती थी। उसमें लीना के सौन्दर्य पर गर्व है तो अपनी हीनता से उत्पन्न आशंका भी।

यह ग्रंथि किस प्रकार संबंधों के बिखराव का कारण बनती है यही टूटना की संवेदना है। इसके साथ ही रचनाकार ने बताया है कि प्रेम, नफरत, क्रोध और सहानुभूति सहचर होते हैं।

शिल्प के स्तर पर कहानी में प्रतीककथाओं यथा पंजा लड़ाते आदमी और महात्मा गांधी की हत्या के माध्यम से मूल संवेदना को खोला गया है।

कहानी में कथानक टूट चुका है पूरी

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कहानी केवल किशोर की मनः स्थिति का विश्लेषण मात्र है।

भाषा अत्यंत प्रतीकात्मक है जो किशोर की मनोग्रंथि और लीना-किशोर के संबंधों में आये तनावों को प्रभावी रूप से व्यंजित करती है।

फ्लैश बैक शैली का बारम्बार प्रयोग किया गया है। चरित्रों में अंतर्द्वंद्व अत्यधिक है।

वस्तुतः इसका राजेन्द्र यादव की प्रतिनिधि कहानी होने के साथ साथ नयी कहानी आंदोलन की भी प्रतिनिधि कहानी है।